2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर-

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी
'पथिक' काव्य खण्ड, कवि- श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' खण्ड काव्य के मूल सन्देश पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'पथिक' खण्ड काव्य वास्तविक रूप में मानव जीवन का दर्शन कराता है। इस खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग में कवि मुनि के द्वारा पथिक को कर्मण्यता का उपदेश देते हुए कहता है यह संसार हमारी कर्मस्थली है। संसार के जितने भी जड़ चेतन स्थावर पदार्थ हैं सभी अपने-अपने काम में लगे हुए हैं। इस संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन का एक निश्चित उद्देश्य है, जिसकी पूर्ति के लिए वह जीवन भर प्रयत्न करता है। यथा- वृक्ष की पत्तियाँ छाते की भाँति वृक्ष के चारों ओर छाई रहती हैं, जिन्दगी भर धूप सहती हैं और इस प्रकार कष्ट सहकर भी अपने उद्देश्य को पूरा करती हैं। समुद्र, शीतल सुगन्धित हवा, बादल इत्यादि प्रकृति के सारे तत्व अपने-अपने कार्य में लगकर मानवता का कल्याण कर रहे हैं।

इस संसार में सभी अपने-अपने कार्यों के द्वारा प्रकृति की महत्ता को प्रतिपादित कर रहे हैं। सूर्य इस संसार को जहाँ आलोकित करता है, वहीं चन्द्रमा अमृत की वर्षा करता है।

यह धरती माता स्नेह की मूर्ति और दयालु है। क्या उसके प्रति तुम्हारा कुछ भी कर्तव्य नहीं है। तुम्हारे परिवार वालों ने तुम्हें चलना सिखाया और भाषा का ज्ञान देकर हृदय की भावनाओं को मूर्त रूप ~~देकर~~ दिखाने में मदद की। क्या उनके प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं। तुम्हें तो केवल अपनी ही चिंता है। संसार से दूर रहकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना ही तुमने अपने कीर्ति का रूप समझ लिया है। परन्तु तुम्हीं सोचो कि इस संसार में तुम्हारे समान कौन सा व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत है।

सद्‌गुण, साहस, सत्य, पौरुष, प्रतिभा, उदारता आदि जो गुण मनुष्य को विधाता से प्राप्त हुए हैं, वे सिर्फ उसके लिए नहीं है। विधाता ने ये सब तत्व अपनी थाती के रूप में मनुष्य को सौंप दिये हैं कि वह संसार के कल्याणार्थ, अवसर आने पर, जब जैसा चाहे उनका उपयोग करे। मनुष्य को राष्ट्र-प्रेम, समाज, मातृभूमि आदि के लिए अपने आप को होम कर देना चाहिए। जो पुरुष समाज के कल्याणार्थ अपने पौरुष, साहस तथा अन्य सद्‌गुणों का प्रयोग करता है वही पुरुषोत्तम कहलाता है।

यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा स्थल है। इसमें कठोर प्रश्न के रूप में दुःख आता है जिसे देखकर बुद्धि विकल हो जाती है। किन्तु जो व्यक्ति अपने आत्मबल को समझते हैं वे अपनी बुद्धि कौशल द्वारा निरन्तर प्रयत्न करते हुए उसका समाधान निकाल लेते हैं।

शेष आगे-

दुःख में बन्धु, वैद्य पीड़ा में, घोर विपदा के समय मित्र, निराशा के समय उत्साह, संशय के समय दृढ़ निश्चय - ये ही आदर्श पुरुष के लक्षण हैं। अतः तुम्हें दृढ़ निश्चय के साथ हर कदम बढ़ाना है। यही तुम्हारा उद्देश्य है।

वस्तुतः दुःख को अपनाने से ही सच्चा सुख मिलता है। दुःख हमारे अन्दर क्षमा, दया, करुणा आदि सुन्दर भावों को जगाता है। इन्हीं गुणों के कारण मनुष्य समाज में आदर पाता है। संसार में जो जितना ही शोषित है, अछूत और दीन है वह उतना ही तुम्हारा प्रेम पाने का अधिकारी है।

यह संसार भगवान का क्रीड़ा स्थल है। यह मनुष्य के लिए एक कर्मक्षेत्र है। मानव जीवन का उद्देश्य है सुन्दर कर्म द्वारा अपने जीवन और जगत को सुखपूर्ण बनाना। जो लोग यह नहीं समझते हैं वही धोखा खाते हैं। मनुष्य पर पहला अधिकार उस देश का है जिसकी रज (धूल) में लोटकर, अन्न-जल खाकर बड़ा हुआ है। दूसरा अधिकार उस जाति का है, जिसने उसे संस्कार दिये। अतः प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र और जाति के ऋण से मुक्त हो। यही 'पथिक' काव्य का मूल संदेश है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 01/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
श० कु० सं० महाविद्यालय० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री-प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध - पंचम सर्ग

कवि- मैथिलीशरण गुप्त

" आगे न अर्जुन बढ़ सके आचार्य-बल वातूल से;
कल्लोल लोल-पयोधि के ज्यों बढ़ न सकते कूल से।
बोले वचन तब पार्थ से हरि- व्यर्थ यह संग्राम है
है काल थोड़ा और करना बहुत भारी काम है।"

भावार्थ

प्रस्तुत पद्यांश पंचम सर्ग से उद्धृत है। पाण्डवों और कौरवों की सेना में घमासान युद्ध चल रहा है। गुरु द्रोणाचार्य ने आज के युद्ध में अर्जुन को आगे बढ़ने से रोक देते हैं। अर्जुन गुरुद्रोणाचार्य के भावों को भाँप कर कृष्ण से कहते हैं कि आज मेरे लिए युद्ध में आगे बढ़ना कठिन प्रतीत हो रहा है।

कवि कहना चाहता है कि अर्जुन आचार्य द्रोणाचार्य की शक्ति रूपी बवंडर के कारण आगे बढ़ने में अपने को असमर्थ महसूस कर रहे हैं। जिस प्रकार किनारे पर उत्पन्न होने वाली गोल लहरें वहीं उत्पन्न होकर वहीं नष्ट हो जाती हैं और आगे नहीं बढ़ पाती हैं, ठीक उसी प्रकार अर्जुन की शक्ति भी वहीं नष्ट हो जा रही है आगे नहीं बढ़ पाती है। तब भगवान ने अर्जुन से कहा कि "यह युद्ध व्यर्थ है। इस समय बहुत थोड़ा समय है और बहुत कठिन काम करना शेष है।

आचार्य द्रोणाचार्य आज पूर्ण वेग से अर्जुन के साथ युद्ध कर रहे हैं और उनको रोके हुए भी हैं। इस बात को भगवान श्री समझ जाते हैं और अर्जुन से कहते हैं कि इस समय पर अब यहाँ सामना करना युद्धनीति के विरुद्ध है। समय कम है और कार्य बड़ा करना है। अतः यहाँ से हट जाना ही उचित है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 01/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० अ० सं० महाविद्यालय लक्षेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

दिगंत - भाग - 2 पाद्य भाग

लेखक - गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न: - "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता के सारांश का शेष भाग -

उत्तर:- जनता अनेक प्रकार के अत्याचार, अन्याय तथा अनाचार से प्रताड़ित हो रही है। मानवता के शत्रु जनशोषक दुर्जन लोग काली-काली छाया के समान, अपना प्रसार कर रहे हैं, अपने अत्याचारों का किला (दुर्ग) खड़ा कर रहे हैं।

गहरी काली छाया के समान दुर्जन लोग अनेक प्रकार के अनाचार तथा अत्याचार कर रहे हैं, उनके कुकृत्यों की काली छाया फैल रही है, ऐसा प्रतीत होता है कि मानवता के शत्रु इन दानवों द्वारा अनैतिक एवं अमानवीय कारनामों का काला दुर्ग काले पहाड़ पर अपनी काली छाया के रूप में प्रसार पा रहा है। एक ओर जनशोषक शत्रु खड़ा है, दूसरी ओर आशा की उल्लासमयी लाल ज्योति से अंधकार का विनाश करते हुए स्वर्ग के समान मित्र का घर है।

सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान एवं चेतना की ज्योति में एक रूपता है। संसार का कण-कण उसके तीव्र प्रकाश से प्रकाशित है। उसके अन्तर से प्रस्फुटित क्रान्ति की ज्वाला अर्थात प्रेरणा सर्वव्यापी तथा उसका रूप भी एक जैसा है। सत्य का उज्ज्वल प्रकाश जन-जन के हृदय में व्याप्त है तथा अभिनव साहस का संचार एक समान हो रहा है क्योंकि अंधकार को चीरता हुआ मित्र का स्वर्ग है।

प्रकाश की शुभ्र ज्योति का रूप एक है। वह सभी स्थान पर एक समान अपनी रोशनी बिखेरता है। क्रान्ति से उत्पन्न ऊर्जा एवं शक्ति भी सर्वत्र एक समान परिलक्षित होती है। सत्य का दिव्य प्रकाश भी समान रूप से सबको आमन्त्रित करता है। शेष आगे की कक्षा में -

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 07/11/20
रा० कु० सं० महावि० सुलक्षो, पूर्णियाँ